प्रकृति प्र–प्रकाश, कृति–रचना अर्थात् प्रकाश की रचना

प्रकृति का शाब्दिक अर्थ होता है– प्रकाश की रचना, मेल का शाब्दिक अर्थ होता है– प्रकृति में जीवन प्राप्त करने का अवसर। प्रकृति मेल का उद्देश्य है प्रकृति निर्माण, वैज्ञानिकता की जानकारी, इसे सुरक्षित सुंदर बनाने के उपाय और मानव की अपनी वैज्ञानिक पहचान कराना।

प्रकृति का निर्माण सूर्य और जल के मिलन से होता है। सूर्य पुरुषत्व और जल स्त्रितत्व है। सूर्य का प्रकाश जब जल के ऊपर पड़ता है तो हवा का निर्माण होता है। हवा में सूर्य, जल दोनों का गुण होता है। यही हवा आसमान की तरफ बढ़कर परिधि का निर्माण करता है। इस प्रक्रिया से कई परिधियां बनती है। परिधियां अपने गुण को सुरक्षित रखने और निर्माणात्मक तापमान बनाए रखने का कार्य करती है। इस निर्माण से तापमान जीव उतपत्ति योग्य बन जाता है। इसके बाद सूर्य प्रकाश जल पर पड़ता है तो जल का जला भाग सूर्य प्रकाश के बिंदु को अपने घेरे में कर लेता है जिसके कारण प्रकाश बिंदु वापस तब तक नहीं जा पाता है जब तक की जल के जले भाग को खर्च नहीं कर देता है। यह प्रकाश बिंदु जीव प्रकाश बन जाता है और जीवन का निर्माण करता है। जीवन निर्माण का उद्देश्य होता है– प्रकृति का निर्माण करना। सबसे पहले जलीय जीव पैदा हुए। जलीय जीव अपना शरीर छोड़ते गए हैं जिससे पदार्थ का निर्माण हुआ। समुद्री मंथन से ये निर्माण किनारा बनते गए जिससे पृथ्वी का निर्माण हुआ। सूर्य प्रकाश पृथ्वी पर पड़ने के कारण पदार्थों में रासायनिक परिवर्तन होना शुरु हुआ। इस परिवर्तन से हवा रूपी ऊर्जा अपने गुणों को सुरक्षित करने के लिए परिधि का निर्माण हुआ। इसी रायायनिक परिवर्तन से पदार्थ भी परिपक्व होने लगे। परिधि अपने गुणों को सुरक्षित करते हुए पृथ्वी जीव विकास योग्य तापमान बनाने लगे। इसके बाद पृथ्वी पर चर– अचर जीव पैदा हुआ। चर– अचर जीव अपना शरीर छोड़कर जाते रहे। जिससे पृथ्वी का विस्तार होता रहा। इस प्रकिया से नए– नए पदार्थों का निर्माण होता रहा। पदार्थ से उत्पन्न होने वाली नकारात्मक ऊर्जा को खत्म करने के लिए वहीं पर जीव पैदा हो जाता है। यह जीव पदार्थ की गंदगी को खत्म करता है। और जब शरीर छोड़ता है तो उसके शरीर से नए पदार्थ का निर्माण हो जाता है। इस प्रकार प्रकृति का विस्तार होता है। जीव प्रकृति विस्तार के साथ– साथ प्रेम व आनंद की अनुभूति करते हैं। इस अनुभूति को आगे बढ़ाते रहने से जीवों की उत्पत्ति होती रहती है। जीव, पदार्थ के विस्तार के साथ– साथ एक भावनातमक ऊर्जा छोड़ते हैं, जो सुगंध को बढ़ाता है अथवा ऐसी ऊर्जा छोड़ते हैं जो नकारात्मक ऊर्जा को खत्म करने की किया करता है। प्रकृति के सभी जीव एहसास के माध्यम से सत्य– असत्य को पहचानते हैं और अपने जीवन की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। इन जीवों की गति प्रकृति की गति से जुड़ी होती है। जिसके कारण ये प्रकृति को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते और जिस गुण पदार्थ को देने के लिए पैदा होते हैं उसी को दे जाते हैं।

इसी प्रकार प्रकृति में गुणात्मक और पदार्थ का विस्तार होता रहा है। जब प्रकृति सज गई तब मानव की उत्पत्ति हुई। प्रकृति मानव को सुंदर बना दी, पर अभी सुगंधित नहीं कर पायी। प्रकृति का अगला उद्देश्य मानव को सुगंधित करना है। मानव की सुगंध उसके भाव हैं। व्यक्ति जैसा सोचता है, जो भाव बनाता है, उसका एहसास शरीर को होता है और उस गुण की ऊर्जा प्रकृति में निकल जाती है। यदि अच्छे भाव होते हैं तो प्रकृति में सुगंध फैलती है जो प्रेम और आनंद को बढ़ाती है। साथ में शरीर के अंदर उसी गुण के पदार्थ का निर्माण करती है। सुगंधित भाव से बने पदार्थ शरीर के अंदर नकारात्मक जीवाणु को नहीं पैदा होने देता है। जिससे शरीर निरोगित रहता है और अन्य को भी निरोगित करने में सहायक होता है। ठीक इसके विपरीत जब व्यक्ति नकारातमक भाव को छोड़ता है तो उसका एहसास निराशाजनक होता है और प्रकृति में दुर्गंध फैलती है। जो बीमारी का कारण बनती हैं। शरीर में पदार्थ का निर्माण अच्छा नहीं होता है, शरीर में नकारात्मक जीवाणु पैदा करता है जो बीमारी का कारण बनता है। आज मानव के अंदर असंख्य बीमारियां जन्म ले चुकी हैं जिसमें से कुछ लाइलाज हो चुकी हैं या सब भावनात्मक प्रदूषण का परिणाम हैं। प्रकृति के अन्य जीवों से भावनात्मक प्रदूषण नहीं निकलता है। इसलिए उनके अंदर बीमारियां बहुत कम पायी जाती हैं। मानव अपनी अच्छी भावना करके इन बीमारियों से बच सकता है और भावनात्मक सुगंध को छोड़कर प्रकृति को सुगंधित करके न्याय प्रणाली को शक्तिशाली बना सकता है। **भावना एक विज्ञान है।** प्रकृति का निर्माण एक विज्ञान है। जरूरत व्यवस्था को सुधारने की नहीं व्यक्ति के सुधरने की है। यह सृष्टिपूर्ण विज्ञान है। सूर्य परम प्रकाश है, जल परम आत्मा। दोनों के मिलन से प्रकृति का निर्माण होता है, यदि इस प्रकृति में पैदा होने का अवसर मिला तो अपनी वैज्ञानिकता को पहचाने। अपने को दाल– रोटी, शौहरत तक सीमित न रखें। प्रकृति किस उद्देश्य के लिए पैदा की है उसे पहचाने। अपनी भावनात्मक ऊर्जा से प्रकृति को महकाएं। इसी सुगंध पूर्ति के लिए प्रकृति ने मानव को पैदा किया। मानव सिर्फ दाल– रोटी के लिए नहीं, अपनी सुगंध से हीरा बन सकता है। और प्रकृति के हीरत्व का विस्तार कर सकता है। प्रकृति मेल का उद्देश्य है–

व्यक्ति को अपने कर्तव्य को याद दिलाना और प्रकृति की जिम्मेदारियों का एहसास कराना। विश्व में भावनात्मक विजय हासिल करना।

सम्पादक